इकाई 3. ध्वनि नियम - ग्रिम, ग्रासमन, वर्नर

3.1 प्रस्तावना

भाषा विज्ञान में ध्वनि नियम का महत्व पूर्ण स्थान है। यह ध्वनि-नियम किसी भाषा विशेष का होता है। ध्वनि नियम सर्वथा अपवाद रहित नहीं होते।

प्रस्तुत इकाई में ग्रिम, ग्रासमन और वर्नर के ध्वनि नियमों का अनुशीलन किया गया है। इनमें ग्रिम, नियम का विशेष महत्व है। जर्मन भाषा के प्रकांड विद्वान् और सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक, आचार्य ग्रिम ने जिस नियम का प्रतिपादन किया है, उसे ग्रिम नियम कहते हैं। ग्रिम नियम का सम्बन्ध नौ स्पर्श ध्वनियों से है। इसे जर्मन भाषा का वर्णन परिवर्तन कहते हैं। यह वर्ण परिवर्तन दो बार हुआ है। इसके प्रश्चात् अपवाद स्वरूप कहते हैं। यह वर्ण परिवर्तन दो बार हुआ है। इसके पश्चात् अपवाद स्वरूप, ग्रासमन और वर्नर के ध्वनि नियम आते हैं।

इस इकाई में ग्रिम, ग्रासमन और वर्नर के ध्वनि नियमों के सम्बन्ध में सम्यक् प्रकाश डाला गया हैं। जिससे आप इसके ध्वनि-नियामें के सम्बन्ध में विधिवत् समझ सकेंगे और इस विषय में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के अनन्तर आप-

- ध्वनि नियम के सम्बन्ध में जानकारी पा सकेंगे।
- ध्वनि नियम ध्वनियों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण नियम हैं।
- ग्रिम, ग्रासमन और वर्नर ध्वनि नियम पर अध्ययन करने वाले प्रमुख आचार्य हैं, यह जान पायेंगे।
- ग्रिम, ग्रासमन और वर्नर ने ध्वनि के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण कार्य किया है, यह जानकारी पा सकेंगे।
- ग्रिम नियम का सम्बन्ध नौ स्पर्श ध्वनियों से है, इसकी जानकारी कर सकेंगे।
- ध्वनि नियमों में ग्रिम नियम अनेक मौलिक विशेषताओं को रखता है, यह ज्ञान कर सकेंगे।
- अपवाद रूप ग्रासमन और वर्नर के ध्वनि नियामें का ज्ञान कर सकेंगे।
- ग्रिम नियम जर्मन भाषा का वर्ण परिवर्तन है, इसे समझ सकेंगे।
- जर्मन भाषा का यह वर्ण परिवर्तन दो बार हुआ है, इसकी जानकरी पा सकेंगे।
- ग्रिम महोदय के द्वार यह वर्ण परिवर्तन दो बार हुआ है, इसको सोदाहरण समझ सकेंगे।

3.3 ध्वनिनियम - (ग्रिम, ग्रासमन, वर्नर) का अर्थ एवं स्वरूप

ध्वनिनियम ध्वनियों से सम्बन्धित नियम हैं। ध्वनिनियम किसी भाषा विशेष का होता है। यह संसार की समस्त भाषाओं पर लागू नहीं होता। ध्वनिनियम निश्चित सीमा में ही रहते हैं। ये सार्वदेशिक और सार्वकालिक नहीं होते हैं। ये ध्वनिनियम सर्वथा अपवाद रहित नहीं होते हैं। जर्मन भाषा के प्रकाण्ड विद्वान सुप्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक आचार्य ग्रिम ने जिस नियम का प्रतिपादन किया है, इसका नाम ग्रिमनियम है। ग्रिमनियम का सम्बन्ध नौ स्पर्श ध्वनियों से है।

इसे जर्मन भाषा का वर्णपरिवर्तन कहते हैं। यह वर्णपरिवर्तन दो बार हुआ है। ग्रिमनियम के सूक्ष्म परीक्षण करने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि इसमें अनेक अपवाद हैं। उन अपवादों की समीक्षा ग्रासमन ने की है। अतएव उसे ग्रासमन नियम कहते हैं। ग्रासमन के संशोधन के बाद भी ग्रिमनियम में कुछ अपवाद रह गये थे, जिनपर वर्नर ने विचार किया है। अतएव उसे वर्नर का नियम कहते हैं।

3.4 ध्वनिनियम - ग्रिम, ग्रासमन, वर्नर

3.4.1 ध्वनि नियम

''आचार्य टकर के अनुसार - ''किसी विशिष्ट भाषा की कुछ विशिष्ट काल और विशिष्ट दशाओं में हुए नियमित परिवर्तन को उस भाषा का ध्वनि नियम कहते हैं''

A phonetic law of a language is a statement of the regular practice of that language at a particular time in regard to the treatment of a particular sound or group of sounds in a particular setting.

इस परिभाषा में निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डाला गया है-

1. ध्वनिनियम किसी भाषा विशेष का होता है। एक ध्वनिनियम संसार की समस्त भाषाओं पर लागू नहीं होता है।
2. यह नियम एक भाषा की समस्त ध्वनियों पर लागू न होकर कुछ विशिष्ट ध्वनियों पर लागू होता है।
3. ध्वनिनियम सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक नहीं होते हैं। वे निश्चित सीमा में ही सीमित रहते हैं।
4. ध्वनिनियमों के लिए विशिष्ट अवस्था और परिस्थिति की अपेक्षा रहती है।
5. ध्वनिनियम सर्वथा अपवाद रहित नहीं होते है ।

3.4.2 ग्रिम-नियम

जर्मन भाषा के अप्रतिम पण्डित एवं प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक आचार्य ग्रिम ने जिस नियम का प्रतिपादन किया है, उस नियम को ग्रिम -नियम के नाम से पुकारा जाता है। यद्यपि इस नियम के प्रथम विचारक इहरे और रेस्क थे। किन्तु इसकी स्मयक् विवेचना ग्रिम महोदय ने की। अतएव यह 'ग्रिम नियम' के नाम से प्रसिद्ध हुआ है।

ग्रिम नियम का सम्बन्ध नौ स्पर्श ध्वनियों से है। 'क्र' से लेकर 'म' पर्यन्त समस्त ध्वनियाँ स्पर्श कहलाती है। (कादयो मावसानाः स्पर्शाः) इस जर्मन भाषा का वर्ण परिवर्तन कहते हैं। जर्मन भाषा का यह वर्ण परिवर्तन दो बार हुआ है। प्रथम वर्ण परिवर्तन ईशा के कई सदी पूर्व में हुआ है तथा द्वितीय वर्ण परिवर्तन लगभग सातवीं शताब्दी में हुआ है।

3.4.3 प्रथम वर्ण परिवर्तन

प्रथम वर्ण परिवर्तन में भारोपीय मूलभाषा के घोष महाप्राण, घोष अल्पप्राण और अघोष अल्पप्राण ध्वनियाँ क्रमशः जर्मन में घोष अल्पप्राण, अघोष अल्पप्राण, और अघोष महाप्राण में परिवर्तित हो जाती हैं। आचार्य ग्रिम का अभिमत है कि मूलभाषा के कुछ व्यञ्जन भारोपीय बोलियों में विशेषतया संस्कृत और ग्रिक में विद्यमान हैं। अतः मूलभाषा स्वरूप संस्कृत या ग्रीक से उदाहरण के लिए शब्द लिए गये हैं और परिवर्तन के लिए जर्मन श्रेणी की अंग्रजी से शब्द लिए गये हैं। संक्षेप में हम इसे इस प्रकार देख सकते हैं-

भारोपीय मूलभाषा	जर्मन
(संस्कृत, लौटिन, ग्रीक)	
घ्, ध्, भ् (घोष महाप्राण)	ग्, द्, ब् (घोष अल्पप्राण)
(ळभ्ए क्भ्ए ठीए)	(ळए क्ए ठए)
ग्, द् ब् (घोष अल्पप्राण)	क्, त, प् , (अघोष अल्पप्राण)
GH,DH,BH	(G,D,B)

प्रथम वर्ग के आदिम भाषा के घ्, ध्, भ् गाथिक भाषा में क्रमशः ग्, द, ब् में परिवर्तित हो जाते हैं।

उदाहरण-

आदिम भाषा	(संस्कृत)	गाथिक भाषा	(अंग्रेजी)
घ् (ह्)	हंसः	ग्	Goose
	दुहिता		Daughter
ध्	विधवा	द्	Widow
	धा		Do

भ्	भातृ	ब Brother
	भू	BE
	भरामि	Bear

द्वितीय वर्ग में आदिम भाषा के ग्, द् ब्, गाथिक में क्रमशः क्, त्, प् हो जाते हैं।

उदाहरण -

आदिम भाषा	(संस्कृत)	गाथिक भाषा	(अंग्रेजी)
ग्	गौ	क्	Cow
	युग		yoke
द्	द्वौ	त्	Two
	दश		Ten
ब्	(संस्कृत में उदहारण नहीं मिलता) स्लेउब (ग्रीक शब्द)		प् Slip

तृतीय वर्ग में आने वाले आदिम भाषा के क्, त्, प्, गाथिक में क्रमशः ख्, थ्, फ्, में बदल जाते हैं।

आदिम भाषा	(संस्कृत)	गाथिक भाषा	(अंग्रेजी)
क्	श्वन्	ख् (ह)	Hound
शतम् = केन्टुम्			Hundred
त्	तृण	थ्	Thorn
	तद्		That
प्	पितृ	फ्	Father
	पद		Foot

3.4.4 द्वितीय वर्ण परिवर्तन

द्वितीय वर्ण परिवर्तन- प्रथम वर्णपरिवर्तन में मूल भारोपीय भाषा से जर्मन भाषा में परिवर्तन हुआ था। द्वितीय वर्ण परिवर्तन में भाषा के ही उच्च जर्मन और निम्न जर्मन ये दो भेद हो गए थे। निम्न जर्मन वर्ग में अंग्रेजी भाषा का समावेश हुआ है।

द्वितीय वर्णपरिवर्तन में निम्न जर्मन के घोष अल्पप्राण (ग्, द्, ब्) अघोष अल्प्राण (क्, त्, प्,) और अघोष महाप्राण (घ्,ध भ्) उच्च जर्मन में क्रमशः अघोष अल्पप्राण (क्, त्, प्,) अघोष महाप्राण

(ख्, ह, थ्, फ्) या (घ्, ध्, भ्) और घोष अल्पप्राण (ग्, द्, ब्) में परिवर्तित हो जाते हैं। इस विषय को संक्षेप में देखें-

निम्न जर्मन (अंग्रजी)	उच्च जर्मन
ग्, द्, ब्	क्, त्, प्
क्, त्, प्,	ख् (ह), थ्, फ्
ख्, थ्, फ्	ग्, द्, ब्

प्रथम वर्ग में आने वाले गाथिक भाषा के ग्, द्, ब्, उच्च जर्मन में क्रमशः क्, त्, प् हो जाते हैं।

निम्न जर्मन (अंग्रजी)		उच्च जर्मन	
ग्	Daughter	क्	Tocher
द्	Day	त्	Tag
ब्		प्	

द्वितीय वर्ग में आने वाले गाथिक भाषा के क्, त्, प्, उच्च जर्मन में ख्, (ह्), थ्, फ् में परिवर्तित हो जाते हैं।

निम्न जर्मन (अंग्रजी)		उच्च जर्मन	
क्	Book	ख्	Buch
	Yoke		Toch
त्	Water	थ्	Wasser
प्	Deep	फ्	Tief
	Sheep		Schaf

तृतीय वर्ग में आने वाले गाथिक भाषा के ख्, थ् फ् उच्च जर्मन में क्रमशः ग्, द्, ब्, बदल जाते हैं। उदाहरण-

निम्न जर्मन (अंग्रजी)		उच्च जर्मन	
ख्(ख् से ग् में बदलने का उदाहरण उपलब्ध नहीं है)		ग्	
थ्	Three	द्	Drei
	Brother		Bruder
	North		Norden

फ् Theif ब् Dieb

ग्रिम महोदय के द्वारा दी गयी प्रथम और द्वितीय वर्ण परिवर्तन की तालिका निम्नलिखित प्रकार की है-

मूलभाषा	आदिम जर्मनिक	उच्च जर्मन
घ्, ध्, भ् (घोष महाप्राण)	ग्, द्, ब् (घोष अल्पप्राण)	क्, त्, प्, (अघोष अल्पप्राण)
(GH,DH,BH)	(G,D,B)	(K,T,P)
ग्, द् ब् (घोष अल्पप्राण)	क्, त्, प् (अघोष अल्पप्राण)	ख्, (ह्), ध्, फ् (अघोष महाप्राण)
G,D,B	K,T,P	(KH)(H),TH,F
क्, त्, प् (अघोष अल्पप्राण)	ख्, (ह्), ध्, फ् (अघोष महाप्राण)	ग्, द् ब् (घोष अल्पप्राण)
K,T,P	(KH)(H),TH,F	G,D,B

इस परिवर्तन को निम्नलिखित त्रिकोण चक्र के द्वारा देखा जा सकता है। प्रथमतः ऊपर से नीचे की ओर तथा तीर की चाल के साथ देखते चले जायें तत्पश्चात् द्वितीय् वर्ण परिवर्तन के लिए ऊपर से नीचे की ओर जाकर तीराङ्कित मार्ग से चले जायें। इस प्रकार दोनों वर्ण परिवर्तन समझे जा सकते हैं-

ख्, थ्, फ् (घ्, ध्, भ्) महाप्राण अघोष सघोष

क् त्, प् ग्, द्, ब्

ग्रिम महोदय का यह ध्वनि नियम पर्याप्त स्पष्ट होते हुए भी दोषयुक्त है। प्रथम वर्ण परिवर्तन में भी यद्यपि अपवाद हैं परन्तु वह ठीक है। द्वितीय वर्ण परिवर्तन में एक निश्चित क्रम देखने को नहीं मिलता है। उदाहरण भी ठीक उसी रूप में नहीं मिलते हैं। इसमें अनेक अपवाद भी हैं। द्वितीय वर्ण परिवर्तन में ग्रिम को वाञ्छित सफलता नहीं मिली है। प्रथम वर्ण परिवर्तन के साथ द्वितीय वर्ण परिवर्तन का शुद्ध रूप इस प्रकार हो सकता है-

मूल भाषा	निम्न जर्मन	उच्च जर्मन
GH,DH,BH	G,D,B	X,T,X
G,D,B	K,T,P	X,Z,SS,SS,F
K,T,P	kh(H)TH,F	X,ST,X

3.4.5 ग्रासमन का ध्वनि नियम

ग्रिम महोदय के नियम के सूक्ष्म परीक्षण करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसमें अनेक अपवाद हैं। उप अपवादों मीमांसा ग्रासमन ने की है। अतएव उस नियम को ग्रासमन नियम के नाम से पुकारा जाता है।

ग्रिम नियम के अनुसार साधारणतया क्, त्, प्, को ख् (ह्), थ्, फ्, होता है, परन्तु ग्, द्, ब्, हो जाता है। जैसे-

मूल भाषा (ग्रीक)		अंग्रेजी	
क्	kIGKHO	ग्	Go
त्	Tuplus	द्	Dumb
प्	Pithos	ब्	Body

ग्रिम के अनुसार kIGKHO के स्थान पर KHO अथवा HOहोना चाहिए, परन्तु GOहोता है।

अतएव ग्रासमन ने यह खोज की कि यदि भारोपीय मूलभाषा में शब्द या धातु के आदि और अन्त में महाप्राण ध्वनियाँ हों तो परिवर्तन होकर एक अल्पप्राण हो जाता है। जैसा कि ग्रीक केkigkho,Tuplus, औरPithosसेGo,Dump,और Body बनते हैं न किHo,Thumb,Fody ।

इसी प्रकार संस्कृत में 'हु' धातु से हुहोति, हुहुतः हुह्वति न बनकर जुहोति, जुहुतः, जुहुति रूप बनते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि भारोपीय मूलभाषा की दो अवस्थायें रही होंगी। प्रथम अवस्था में तो महाप्राण रहे होंगे और दूसरी अवस्था में नहीं। यही कारण है कि अपवाद स्वरूप क्, त्, प्, के स्थान पर ग्, द्, ब्, मिलते हैं। प्राचीन मूलभाषा के समय के क्, त् प्, का पुराना रूप ख (ह्), थ्, , रहा होगा, जो कि परिवर्तित दशा में ग्, द् ब, हो गया है और ख्, थ्, फ् का पुनः ग्, द्, ब्, हो जाना नियमानुकूल है।इस प्रकार यह फलित हुआ कि ग्रासमन के उपर्युक्त संशोधन के अनुसार, भारोपीय मूलभाषा में यदि एक वर्ण या धातु आदि और अन्त दोनों में प्राणध्वनि अन्यत्र महाप्राण स्पर्श हो तो संस्कृत, ग्रीक आदि में एक अल्पप्राण हो जाता है ।

3.4.6 ह्वर्नर की ध्वनि नियम

ग्रासमन के संशोधन के पश्चात् भी ग्रिम नियम में कुछ अपवाद रह गए हैं। वर्नर ने यह खोज की कि ग्रिम नियम स्वराघात पर आधारित था। उनके अनुसार यदि भारोपीय मूलभाषा के क्, त्, प्, के पहले स्वराघात होगा तो ग्रिम नियम के अनुसार परिवर्तन होता है और यदि स्वराघात क्, त्, प्, के बाद वाले स्वर पर होगा तो परिवर्तन एक पग आगे कार्य करेगा और तब ग्रासमन के नियम की भाँति, ग्, द्, ब् हो जाता है।

जैसे-

संस्कृत	लैटिन	गाथिक	अंग्रेजी
शतम्	Centum	Hundra	Hundred
लिम्पामि	Lippus	Bileiba	Belife

सप्तन्	Septem	Sibum	Seven

ग्रिम ने यह भी कहा था कि 'स्' के लिए स्' ही मिलता है परन्तु कुछ उद्धरणों में 'स्' के स्थान पर 'र्' भी मिलता है। इसके लिए भी वर्नर ने स्वराघात को ही कारण बतलाया है। उनका कथन है कि यदि 'स्' के पूर्व स्वराघात हो तो 'स्' ही रहेगा और यदि बार में होगा तो 'स्' को 'र्' हो जाएगा।

वर्नर ने एक और महत्व पूर्ण बात बतलायी है कि यदि मूल भारोपीय के क्, त्, प् के पूर्व 'स्' संयुक्त होगा। जैसे - स्क, स्त, स्प (SK,ST,SP)तो जर्मेनिक में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है। जैसे-

लैटिन	गाथिक	अंग्रेजी
Piskis	.	fisks
Aster	Stas	-

इस प्रकार विभिन्न ध्वनि -नियमों एवं संशोधनों के होने पर भी कुछ अपवाद शेष ही रह जाते हैं। जिनका मूल कारण समानता को ही मानना पड़ता है।

3.5 सारांश

इस इकाई में पढ़ने के बाद आप जान चुके हैं-

1. ध्वनियों के नियमित परिवर्तन को उस भाषा का ध्वनि नियम कहते हैं।
2. ध्वनि नियम किसी भाषा विशेष का होता है।
3. एक ध्वनि नियम संसार की समस्त भाषाओं पर लागू नहीं होता है।
4. ध्वनि नियम सर्वथा अपवाद रहित नहीं होते हैं।
5. जर्मन के सुप्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक विद्वान् ग्रिम ने जिस नियम का प्रतिपादन किया है, उसे ग्रिम नियम से पुकारा जाता है।
6. ग्रिम नियम का सम्बन्ध नौ स्पर्श ध्वनियों से है।
7. इसे जर्मन भाषा का वर्ण परिवर्तन कहते हैं।
8. जर्मन का यह वर्ण परिवर्तन दो बार हुआ है।
9. प्रथम वर्ण परिवर्तन में भारोपीय मूल भाषा के घोष महाप्राण, घोष अल्पप्राण, और अघोष अल्पप्राण ध्वनियाँ क्रमशः जर्मन में घोष अल्पप्राण, अघोष अल्पप्राण और अघोष महाप्राण में परिवर्तित हो जाती है।
10. द्वितीय वर्ण-परिवर्तन में निम्न जर्मन के घोष अल्प्राण (ग्, द्, ब्,) अघोष अल्पप्राण (क्, त्, प्)

और अघोष महाप्राण (घ्, ध्, भ्) उच्च जर्मन में क्रमशः अघोष अल्पप्राण (क्, त्, प्) अघोष महाप्राण (ख् (ह्), थ् फ्) या (घ्, ध्, भ) और घोष अल्पप्राण (ग्, द्, ब्) में परिवर्तित हो जाते हैं।

11. ग्रिम नियम के अपवादों की मीमांसा ग्रासमन और वर्नर ने की, अतः उनके ध्वनि नियम ग्रासमन और वर्नर के नाम से प्रसिद्ध हैं।

3.6 शब्दावली

ग्रिम नियम - जर्मन के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य ग्रिम ने जिस नियम का प्रतिपादन किया है, उसे ग्रिम नियम कहते हैं।

स्पर्श ध्वनियाँ - क से लेकर म पर्यन्त सभी ध्वनियाँ स्पर्श कहलाती है।

प्रथम वर्ण परिवर्तन - प्रथम वर्ण परिवर्तन में भारोपीय मूलभाषा के घोष महाप्राण, घोष अल्पप्राण और अघाष अल्पप्राण ध्वनियाँ क्रमशः जर्मन में घोष अल्पप्राण, अघोष अल्पप्राण और अघोष महाप्राण में परिवर्तित हो जाती है।

प्रथम वर्ण की आदि म भाषा के घ, ध, भ, गाथित भाषा में क्रमशः ग, द, व में परिवर्तित हो जाते हैं, इनके उदाहरण-

आदिम भाषा	(संस्कृत)		गाथिक भाषा	(अंग्रेजी)
घ् (ह्)	हंसः		ग्	Goose
	दुहिता			Daughter
ध्	विधवा		द्	Widow
	धा			Do
भ्	भातृ		ब	Brother
	भू	Be		
	भरामि	Bear		

द्वितीय वर्ण परिवर्तन

द्वितीय वर्ण परिवर्तन में निम्न जर्मन के घोष अल्पप्राण (ग्, द्, ब) अघोष अल्पप्राण (क्, त्, प) अघोष महाप्राण (घ्, ध, भ्) उच्च जर्मन में क्रमशः अघोष अल्पप्राण (क्, त्, प्,) अघोष महाप्राण (ख् (ह्), थ्, फ्,) या (घ्, ध्, भ्,) और घोष अल्पप्राण (ग्, द्, ब) में परिवर्तित हो जाते हैं। इस विषय को संक्षेप में देखें-

निम्न जर्मन (अंग्रजी)	उच्च जर्मन
ग्, द्, ब्	क्, त्, प्
क्, त्, प्,	ख् (ह), थ्, फ्
ख्, थ्, फ्	ग्, द्, ब्

ग्रिम महोदय के द्वारा दी गयी प्रथम और द्वितीय वर्ण परिवर्तन की स्थिति

मूलभाषा	आदिम जर्मनिक	उच्च जर्मन
घ्, ध्, भ् (घोष महाप्राण)	ग्, द्, ब् (घोष अल्पप्राण)	क्, त्, प्, (अघोष अल्पप्राण)
(GH,DH,BH)	(G,D,B)	(K,T,P)
ग्, द् ब् (घोष अल्पप्राण)	क्, त्, प् (अघोष अल्पप्राण)	ख्, (ह्), ध्, फ् (अघोष महाप्राण)
G,D,B	K,T,P	(kh)(H)TH,F
क्, त्, प् (अघोष अल्पप्राण)	ख्, (ह्), ध्, फ् (अघोष महाप्राण)	ग्, द् ब् (घोष अल्पप्राण)
K,T,P	(kh)(H)TH,F	G,D,B

इस परिवर्तन को निम्नलिखित त्रिकोण चक्र के द्वारा देखा जा सकता है। प्रथमतः ऊपर से नीचे की ओर तथा तीर की चाल के साथ देखते चले जायें तत्पश्चात् द्वितीय् वर्ण परिवर्तन के लिए ऊपर से नीचे की ओर जाकर तीराङ्कित मार्ग से चले जायें। इस प्रकार दोनों वर्ण परिवर्तन समझे जा सकते हैं-

ख्, थ्, फ् (घ्, ध्, भ्) महाप्राण अघोष सघोष

क् त्, प्   ग्, द्, ब्

अघोष अल्पप्राण   सघोष अल्पप्राण

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उतर

क-

प्रश्न 1 - ध्वनिनियम किसे कहते हैं?

उत्तर - किसी विशिष्ट भाषा की कुछ विशिष्ट ध्वनियों में किसी विशिष्ट काल और कुछ विशिष्ट दशाओं में हुए नियमित परिवर्तन को उस भाषा का ध्वनिनियम कहते हैं।

प्रश्न 2 - क्या एक ध्वनिनियम संसार की समस्त भाषाओं पर लागू होता है?

उत्तर - एक ध्वनिनियम संसार की समस्त भाषाओं पर लागू नहीं होता है।

प्रश्न 3 - क्या ध्वनिनियम सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक होते हैं?

उत्तर - नहीं।

प्रश्न 4 - क्या ध्वनिनियम सर्वथा अपवाद रहित होते हैं?

उत्तर - ध्वनिनियम सर्वथा अपवादरहित नहीं होते हैं।

प्रश्न 5- ग्रिमनियम किसे कहते हैं?

उत्तर - जर्मन भाषा के सुप्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक ग्रिम ने जिस नियम का प्रतिपादन किया है, उस नियम को ग्रिमनियम कहते हैं

प्रश्न 6 - ग्रिमनियम का सम्बन्ध कितनी स्पर्श ध्वनियों से हैं?

उत्तर - ग्रिम नियम का सम्बन्ध नौ स्पर्श ध्वनियों से है।

प्रश्न 7 - क्या ग्रिम नियम को जर्मन भाषा का वर्ण परिवर्तन कहते हैं?

उत्तर - हाँ।

प्रश्न 8 - जर्मन भाषा का वर्ण परिवर्तन कितने बार हुआ?

उत्तर - जर्मन भाषा का वर्ण परिवर्तन दो बार हुआ।

प्रश्न 9 - प्रथम वर्ण परिवर्तन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - प्रथम वर्ण में भारोपीय मूल भाषा के घोष महाप्राण, घोष अल्पप्राण और अघोष अल्पप्राण ध्वनियाँ क्रमशः जर्मन में घोष अल्पप्राण, अघोष अल्पप्राण और अघोष महाप्राण में परिवर्तित हो जाते हैं।

प्रश्न 10 - तृतीय वर्ग में आने वाले आदिम भाषा के क्, त्, प्, गाथित भाषा में किस रूप में परिवर्तित हो जाते हैं?

उत्तर - ख्, थ्, फ्, के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।

प्रश्न 11 - द्वितीय वर्ण परिवर्तन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - द्वितीय वर्ण परिवर्तन में निम्न जर्मन के घोष अल्पप्राण (ग्, द्, ब) अघोष अल्पप्राण (क्, त्,प) अघोष महाप्राण (घ्, ध, भ्) उच्च जर्मन में क्रमशः अघोष अल्पप्राण (क्, त्, प्,) अघोष महाप्राण (ख् (ह्), थ्, फ्,) या (घ्, ध्, भ्,) और घोष अल्पप्राण (ग्, द्, ब) में परिवर्तित हो जाते हैं। इस विषय को संक्षेप में देखें-

निम्न जर्मन (अंग्रजी)	उच्च जर्मन
ग्, द्, ब्	क्, त्, प्
क्, त्, प्,	ख् (ह), थ्, फ्
ख्, थ्, फ्	ग्, द्, ब्

प्रश्न 12 - द्वितीय वर्ण परिवर्तन के द्वितीय वर्ग में आने वाल गाथिक भाषा के क्, त्, प्, उच्च जर्मन में किस रूप में परिवर्तन हो जाते हैं?

उत्तर - ख्, थ्, फ्, में परिवर्तित हो जाते हैं।

प्रश्न 13 - ग्रासमन नियम किसे कहते हैं?

उत्तर - ग्रिम नियम के सूक्ष्म परीक्षण से उसमें अनके अपवाद प्राप्त हुए हैं। उन अपवादों की समीक्षा ग्रासमन ने की, अतएव उस नियम को ग्रासमन नियम कहते हैं।

प्रश्न 14 '- वर्नर के ध्वनिनियम पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - वर्नर ने यह खोज की कि ग्रिम नियम स्वराघात पर आधारति था। उनके अनुसार यदि भारोपीय मूलभाषा के क्, त्, प्, के पहले स्वराघात होगा तो ग्रिम नियम के अनुसार परिवर्तन होता है और यदि स्वराघात क्, त्, प्, के बाद वाले स्वर पर होगा तो परिवर्तन एक पग आगे कार्य करेगा

और तब ग्रासमन के नियम की भाँति, ग्, द्, ब् हो जाता है ।

ख -प्रश्न 1 - जर्मन भाषा का वर्ण परिवर्तन कितने बार हुआ?

(क) दो बार (ख) तीन बार

(ग) चार बार (घ) पाँच बार

उत्तर - (क) दो बार।

प्रश्न 2 - क्या एक ध्वनि नियम संसार की सभी भाषाओं पर लागू होता है?

क) हाँ (ख) नहीं

(ग) हो सकता है (घ) हुआ है

उत्तर - (ख) नहीं।

प्रश्न 3 - ध्वनि नियम अपवाद रहित है-

क) हाँ (ख) नहीं

(ग) हो सकते हैं (घ) हुए हैं

उत्तर - (ख) नहीं

प्रश्न 4 - ग्रिम नियम का सम्बन्ध है-

क- पाँच स्पर्श ध्वनियों से

ख - सता स्पर्श ध्वनियों से

ग- नौ स्पर्श ध्वनियों से

घ - ग्यारह स्पर्श ध्वनियों से

उत्तर - (ग) नौ स्पर्श ध्वनियों से

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यास्क, निरूक्त, सम्पादक डा0 शिवबालक द्विवेदी (सं0 2057) - संस्कृत नवप्रभात न्यास, शारदानगर, कानपुर।

2. द्विवेदी डा0 शिवबालक (2003 ई0) संस्कृत व्याकरणम् - अभिषेक प्रकाशन, शारदानगर, कानपुर।

3 श्रीवरदराजाचार्य (सं0 2017) मध्यसिद्धान्त कौमुदी - चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी।

4. आप्टे वाम शिवराम (1939 ई0) संस्कृत हिन्दी कोश- मोती लाल बनारसीदास बंग्लो रोड, जवाहरनगर दिल्ली।

5. द्विवेदी डा0 शिवबालक (1879ई0) संस्कृत भाषा विज्ञान- ग्रन्थम रामबाग, कानपुर।

3.9 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

1.तिवारी डा0 भोलानाथ (2005 ई0) भाषाविज्ञान - किताबमहल सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद।

2.द्विवेदी डा0 शिवबालक (2005 ई0) भाषा विज्ञान - ग्रन्थम रामबाग, कानपुर।

3.द्विवेदी डा0 शिवबालक (2010 ई0) संस्कृत रचना अनुवार कौमुदी, हंसा प्रकाशन, चांदपोल बाजार , जयपुर।

4.शास्त्री भीमसेन (सं0 2006) लघुसिद्धान्तकौमुदी - लाजपतराय मार्केट दिल्ली।

5.महर्षि पतंजलि (1969 ई0) व्याकरण महाभाष्य - मोतीलाल बनारसी दास बंग्लोरोड ,जवाहरनगर, वारणसी।

6.शास्त्री चारूदेव (1969 ई0) व्याकरण चन्द्रोदय, मोतीलाल बनारसीदास, बंग्लोरोड, जवाहरनगर ,वारणसी।

7.डा0 रामगोपाल (1973 ई0) वैदिक व्याकरण - नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

क- 1. ध्वनि नियम किसे कहते हैं

2. ग्रिम नियम पर प्रकाश डालिए।

3. ग्रिम नियम के अन्तर्गत प्रथम वर्ण परिवर्तन की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

4. ग्रिम नियम के अन्तर्गत द्वितीय वर्ण परिवर्तन पर प्रकाश डालिए।

5. ग्रासमन के ध्वनि नियम का निरूपण कीजिए।

6. वर्नर के ध्वनि नियम पर प्रकाश डालिए।

ख - 1. ग्रिम नियम

2. प्रथम वर्ण परिवर्तन

3. द्वितीय वर्ण परिवर्तन